पाठ का परिचय

प्रस्तुत कहानी में देश में फैले अंध-विश्वासों और ऊँच-नीच के भेदभाव को बेनकाब किया गया है। इसमें बताया गया है कि दुःख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। यह सत्य है कि दुःख सभी को तोड़ता है, दुःख में हर कोई मातम मनाना चाहता है, दुःख के क्षण से सामना होने पर सब विवश हो जाते हैं, लेकिन हमारे देश में कुछ ऐसे भी अभागे लोग हैं, जिन्हें न तो दुःख मनाने का अधिकार है और न ही अवकाश। यह कहानी मध्यमवर्गीय समाज की दकियानूसी अमानवीय सोच और निम्नवर्गीय समाज की दुःख में भी कार्य करने की विवशता का वास्तविक चित्रण करती है।

पाठ का सारांश

पोशाक का महत्त्व–पोशाक का मानव-जीवन में बहुत महत्त्व है। पोशाकें मनुष्य को विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं तथा समाज में उसका अधिकार और दर्ज़ा निश्चित करती हैं। पोशाक उसके लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है। लेकिन जब कभी मनुष्य झुककर निचली श्रेणी के लोगों की अनुभूति को समझना चाहता है तो पोशाक उसके लिए बंधन बन जाती है। वह उसे ऐसा करने से रोकती है। इसी कारण लेखक बाज़ार में रोती हुई खरबूज़े बेचती एक बुढ़िया के पास बैठकर उसके रोने का कारण नहीं पूछ सका।

बाज़ार में रोती बुढ़िया–बाज़ार में फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर रखे थे। वे सब बिक्री के लिए थे। उनके पास एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। उसके खरबूज़े कोई नहीं खरीद रहा था; क्योंकि बुढ़िया कपड़े में अपना मुँह छिपाए फफक-फफककर रो रही थी।

बुढ़िया के बारे में लोगों की बातें–आस-पास खड़े लोग बुढ़िया के बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। एक ने कहा–"क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन भी नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगाके बैठी है।" दूसरे ने कहा–"अरे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।" तीसरे ने कहा–"अरे इन लोगों का क्या है? ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।" चौथे ने कहा कि "जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और वह यहाँ सड़क पर बाज़ार में आकर खरबूज़े बेचने बैठ गई है।.........कोई इसके खरबूज़े खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अँधेर है।"

बुढ़िया के रोने का कारण–लेखक को आस-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता चला कि बुढ़िया का तेईस वर्ष का लड़का था, जो अपनी डेढ़ बीघा ज़मीन में कछियारी करके परिवार का पालन-पोषण करता था। परसों सुबह वह मुँह अँधेरे बेलों से पके खरबूज़े चुन रहा था कि एक साँप ने उसे डँस लिया और उसकी मृत्यु हो गई। इसीलिए बुढ़िया रो रही थी।

बुढ़िया की विवशता–बुढ़िया ने अपने बेटे को बचाने के लिए ओझा से झाड़-फूँक करवाई। नाग देवता की पूजा करवाई, जिसकी दान-दक्षिणा में घर का सारा आटा, चावल और अनाज चला गया। उसके अंतिम संस्कार के लिए घर के कंगन आदि भी बेच दिए। घर में पोता-पोती और बहू थी। खाने-पीने के लिए घर में कुछ भी नहीं था। सुबह उठते ही बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे। बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बुढ़िया ने अपने दिल पर पत्थर रखा और खरबूज़े लेकर बेचने के लिए बाज़ार में चली आई। यह उसकी विवशता थी कि वह अपने बेटे का शोक भी न मना सकी।

लेखक द्वारा बुढ़िया के दुःख का अनुमान–बुढ़िया के दुःख का अनुमान लगाने के लिए लेखक अपने पड़ोस की उस महिला के बारे में सोचने लगा, पिछले साल जिसके पुत्र की मृत्यु हो गई थी। महिला संभ्रांत परिवार की थी। वह पुत्र की मृत्यु के अढ़ाई मास तक पलंग से नहीं उठी थी। दो-दो डॉक्टरों ने उसकी देखभाल की थी। उसे पंद्रह-पंद्रह मिनट में मूर्च्छा आ जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

लेखक को बुढ़िया के दुःख का अनुमान हो गया था। उसकी समझ में आ गया था कि दुःख की अनुभूति सबको समान ही होती है, लेकिन शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और······दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्ज़ा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

1. मनुष्यों की पोशाकें क्या करती हैं–

(क) मनुष्यों में समानता लाती हैं
(ख) मनुष्यों को श्रेणियों में बाँटती हैं
(ग) मनुष्यों को सुंदर बनाती हैं
(घ) मनुष्यों को सम्मान दिलाती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. **समाज में मनुष्य का अधिकार और दर्ज़ा कौन निश्चित करता है–**
(क) उसकी विद्या (ख) उसका धन
(ग) उसकी पोशाक (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. **पोशाक कब बंधन बन जाती है–**
(क) जब हम ऊपर उठना चाहते हैं
(ख) जब हम आगे बढ़ना चाहते हैं
(ग) जब हम धन कमाना चाहते हैं
(घ) जब हम निचली श्रेणियों की सहानुभूति में झुकना चाहते हैं।
4. **हमारे लिए बंद दरवाज़े कौन खोल देता है–**
(क) हमारी विद्या (ख) हमारी वाक् कला
(ग) हमारी पोशाक (घ) हमारा व्यवहार।
5. **'दर्ज़ा' शब्द है–**
(क) तत्सम (ख) तद्भव
(ग) देशज (घ) विदेशी।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)।

(2) पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूज़े चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

1. **लेखक को बुढ़िया के विषय में जानकारी कहाँ से मिली–**
(क) उसके घर से (ख) उसके पड़ोसी से
(ग) पास-पड़ोस की दुकानों से (घ) उसके रिश्तेदारों से।
2. **बुढ़िया का लड़का कितने बरस का था–**
(क) सोलह बरस का (ख) बीस बरस का
(ग) तीस बरस का (घ) तेईस बरस का।
3. **लड़का क्या काम करता था–**
(क) नौकरी (ख) मज़दूरी
(ग) कछियारी (घ) व्यापार।
4. **लड़का कैसे मरा–**
(क) बीमारी से (ख) साँप के डँसने से
(ग) कुत्ते के काटने से (घ) पानी में डूबने से।
5. **बुढ़िया के घर में और कौन-कौन थे–**
(क) उसके माता-पिता
(ख) उसके सास-ससुर
(ग) उसकी बहू और पोता-पोती
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ग)।

(3) लड़के की बुढ़िया माँ बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपटकर रोए, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

1. **लड़के की बुढ़िया माँ उसके इलाज के लिए किसे बुलाकर लाई–**
(क) डॉक्टर को (ख) वैद्य को
(ग) ओझा को (घ) एक साधु को।
2. **किसकी पूजा की गई–**
(क) शिव की (ख) दुर्गा की
(ग) विष्णु की (घ) नाग देवता की।
3. **पूजा के लिए क्या चाहिए–**
(क) फूल (ख) फल
(ग) दान-दक्षिणा (घ) इनमें से कोई नहीं।
4. **बुढ़िया के बेटे के इलाज़ के लिए क्या किया गया–**
(क) झाड़ना-फूँकना हुआ (ख) दवाइयाँ दी गईं
(ग) जड़ी-बूटियाँ दी गईं (घ) मंत्र-तंत्र का प्रयोग हुआ।
5. **बुढ़िया के लड़के का क्या नाम था–**
(क) सुखबीरा (ख) भगवाना
(ग) धरमा (घ) करमा।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)।

(4) उस पुत्र-वियोगिनी के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह संभ्रांत महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी। उन्हें पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बरफ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

1. **बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा लगाने के लिए लेखक ने क्या किया–**
(क) वह गहन चिंतन करने लगा
(ख) विशेषज्ञ के पास गया
(ग) अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा
(घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **संभ्रांत महिला कितने दिन तक पलंग से न उठ सकी थी–**
(क) चार मास तक (ख) तीन मास तक
(ग) दो मास तक (घ) अढ़ाई मास तक।
3. **पुत्र-वियोग में महिला की क्या दशा थी–**
(क) वह ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर रही थी
(ख) वह बिलकुल मौन हो गई थी
(ग) उसे पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद मूर्छा आ जाती थी
(घ) वह पागल हो गई थी।
4. **महिला के सिरहाने हरदम कौन बैठे रहते थे–**
(क) उसके पति (ख) दो-दो नौकर
(ग) दो-दो डॉक्टर (घ) पड़ोस के लोग।
5. **शहर भर के लोगों के मन किसके पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे–**
(क) लेखक के पुत्र-शोक से
(ख) बुढ़िया के पुत्र-शोक से
(ग) संभ्रांत महिला के पुत्र शोक से
(घ) मंत्री के पुत्र-शोक से।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'दुःख का अधिकार' पाठ के लेखक हैं–**
(क) रामविलास शर्मा (ख) यशपाल
(ग) काका कालेलकर (घ) स्वामी आनंद।
2. **यशपाल का जन्म कब हुआ था–**
(क) सन् 1905 में (ख) सन् 1906 में
(ग) सन् 1903 में (घ) सन् 1904 में।
3. **बुढ़िया के किस काम को लोग अपराध बता रहे थे–**
(क) सूतक में खरबूज़े बेचने को
(ख) सूतक में खरबूज़े खाने को
(ग) सूतक में परचून की दूकान पर जाने को
(घ) सूतक में घूमने को।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. दुकान के तख्तों पर बैठे लोग बुढ़िया के बारे में कैसी बातें कर रहे थे–
(क) प्रशंसा की बातें (ख) समझदारी की बातें
(ग) घृणित बातें (घ) सच्ची बातें।

5. लेखक बुढ़िया के दुःख से बहुत दुःखी होकर भी स्वयं उसकी सहायता के लिए क्यों नहीं गया–
(क) वह स्वयं को अशुद्ध नहीं करना चाहता था
(ख) वह समाज के नियमों में विश्वास रखता था
(ग) उसे अपनी पोशाक की मर्यादा को बनाए रखना था
(घ) वह लज्जा का पात्र नहीं बनना चाहता था।

6. बुढ़िया को देखकर लेखक की मनोदशा कैसी हो गई–
(क) वह खुशी से भर गया (ख) व्यथित हो गया
(ग) निराश हो गया (घ) पागल हो गया।

7. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है–
(क) पोशाक मनुष्य के सामाजिक स्तर को दर्शाती है
(ख) पोशाक के द्वारा ही मनुष्य अपने और अन्य मनुष्यों में भेद करता है
(ग) खास परिस्थितियों में पोशाक हमें नीचे झुकने से रोकती है
(घ) उपर्युक्त सभी।

8. 'दुःख का अधिकार' कहानी में लेखक क्या बताना चाहता है–
(क) दुःख व्यक्त करने का अधिकार अमीरों को ही होता है
(ख) गरीब आदमी को दुःख की अनुभूति कम होती है
(ग) गरीब आदमी को दुःख व्यक्त करने का अधिकार नहीं है
(घ) दुःख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है।

9. कोई भी बुढ़िया के खरबूज़े क्यों नही खरीद रहा था–
(क) खरबूज़े बहुत महँगे थे
(ख) खरबूज़े मीठे नहीं थे
(ग) बुढ़िया के घर में सूतक लगा था
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

10. बुढ़िया और संभ्रांत महिला का दुःख समान होते हुए भी भिन्न कैसे था–
(क) आर्थिक असमानता के कारण
(ख) राजनीतिक असमानता के कारण
(ग) खुशी के कारण
(घ) आशावादी दृष्टिकोण के कारण।

11. लोग वृद्धा को अपमानित नहीं करते यदि–
(क) बुढ़िया का पुत्र जीवित होता
(ख) बुढ़िया संभ्रांत परिवार से होती
(ग) बुढ़िया शिक्षित व आत्मनिर्भर होती
(घ) उसकी बहू उसके साथ होती।

12. बुढ़िया को कोई भी उधार क्यों नहीं देता था–
(क) क्योंकि उसे जरूरत नहीं थी
(ख) क्योंकि उसके घर कमाने वाला कोई नहीं था
(ग) क्योंकि उसके पास पैसे नहीं बचे थे
(घ) क्योंकि उसने पहले भी पैसे नहीं चुकाए थे।

13. फुटपाथ पर बुढ़िया के पास बैठने में लेखक के सामने क्या व्यवधान था–
(क) फुटपाथ पर फैली गंदगी (ख) उसके घुटने में लगी चोट
(ग) उसकी अच्छी पोशाक (घ) आस-पास खड़े लोग।

14. लालाजी के अनुसार जवान बेटे के मरने पर कितने दिन का सूतक होता है–
(क) आठ दिन का (ख) नौ दिन का
(ग) दस दिन का (घ) तेरह दिन का।

15. सुबह मुँह-अँधेरे भगवाना खेत में क्या कर रहा था–
(क) निराई-गुड़ाई कर रहा था
(ख) बेलों की सिंचाई कर रहा था
(ग) बेलों से खरबूज़े चुन रहा था
(घ) खेत की रखवाली कर रहा था।

16. बेटे का कफ़न लाने के लिए बुढ़िया ने क्या किया–
(क) महाजन से पैसे उधार लिए
(ख) पड़ोसियों से पैसे माँगे
(ग) घर में रखे खरबूज़े बेच दिए
(घ) अपने हाथों का छन्नी-ककना बेच दिया।

17. भूख से बिलबिलाते बच्चों को खाने के लिए बुढ़िया ने क्या दिया–
(क) रोटियाँ (ख) भात
(ग) खरबूज़े (घ) तरबूज़।

18. बुढ़िया अपनी बहू को खरबूज़ा क्यों नहीं खिला सकी–
(क) उसे खरबूज़े अच्छे नहीं लगते थे
(ख) घर में और खरबूज़े नहीं थे
(ग) बहू बुखार से तवे की तरह तप रही थी
(घ) उपर्युक्त कोई कारण नहीं।

19. 'और चारा भी क्या था?' यह पंक्ति बुढ़िया के किस भाव को व्यक्त करती है–
(क) विवशता को (ख) निराशा को
(ग) प्रसन्नता को (घ) धैर्य को।

20. 'दुःख का अधिकार' कहानी देश में फैली किस बुराई को बेनकाब करती है–
(क) दहेज प्रथा को
(ख) भ्रष्टाचार को
(ग) अंध-विश्वासों और ऊँच-नीच के भेदभाव को
(घ) अशिक्षा और शोषण को।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (घ) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ग) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : बुढ़िया को कोई भी उधार क्यों नहीं देता?

उत्तर : बुढ़िया के घर में कमाने वाला केवल उसका लड़का ही था। उसकी मृत्यु हो चुकी थी। वह बहुत गरीब थी। उससे उधार वापस आने की किसी को कोई उम्मीद नहीं थी; इसलिए उसे कोई उधार नहीं देता था।

प्रश्न 2 : बुढ़िया के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर : बुढ़िया के लड़के की मृत्यु का कारण यह था कि उसे एक जहरीले साँप ने डँस लिया था।

प्रश्न 3 : किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर : किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें उसकी आर्थिक स्थिति का पता चलता है और यह भी पता चलता है कि वह उच्च श्रेणी का है या निचली श्रेणी का।

प्रश्न 4 : खरबूज़े बेचने वाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर : खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बेटे की मृत्यु एक दिन पहले ही हुई थी। वह उसी के दुःख में कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी। इसलिए कोई भी उससे खरबूज़े नहीं खरीद रहा था।

प्रश्न 5 : मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्त्व है?

उत्तर : मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्त्व है। पोशाक मनुष्यों को श्रेणियों में बाँट देती है तथा समाज में मनुष्य का अधिकार और दर्ज़ा निश्चित करती है। पोशाक उसके लिए अनेक बंद दरवाज़े खोलती है।

प्रश्न 6 : लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर : लड़के की मृत्यु के बाद बुढ़िया के परिवार का पालन-पोषण करने वाला कोई नहीं था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती थे। घर में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खाने के लिए कुछ भी नहीं था। बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे और बहू बुखार से तप रही थी। उसे कोई उधार भी नहीं दे रहा था। इसलिए बच्चों के लिए कुछ खाने-पीने और बहू के इलाज का प्रबंध करने के लिए बुढ़िया विवश होकर लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन खरबूज़े बेचने के लिए चल पड़ी।

प्रश्न 7 : लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर : स्त्री गरीब थी तथा फुटपाथ पर बैठी रो रही थी। उसके पास बैठकर उसके रोने का कारण पूछने में लेखक की पोशाक व्यवधान बन रही थी। इसीलिए वह उसके रोने का कारण नहीं जान पाया।

प्रश्न 8 : पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर : जब कभी हम झुककर निचली श्रेणी के लोगों का दुःख-दर्द पूछना चाहते हैं या उनके पास बैठकर उनके दुःख का अनुभव करना चाहते हैं, तब पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बन जाती है। उस समय हम अपनी अच्छी पोशाक के कारण ऐसा नहीं कर पाते।

प्रश्न 9 : भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर : भगवाना के पास शहर के नज़दीक डेढ़ बीघा ज़मीन थी, उसमें कछियारी करके वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। वह खरबूज़े और सब्ज़ियाँ उगाता था और उन्हें बाज़ार में बेचता था।

प्रश्न 10 : बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर : बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आ गई; क्योंकि उसके भी पुत्र की मृत्यु हो गई थी। पुत्र की मृत्यु के अढ़ाई महीने तक वह पलंग से नहीं उठ पाई थी। उसे पंद्रह-पंद्रह मिनट में मूर्च्छा आ जाती थी। दो-दो डॉक्टरों ने उसकी देखभाल की थी। शहर के लोगों के मन उसके पुत्र-शोक से द्रवित हो गए थे। दूसरी ओर बुढ़िया को अपने पुत्र की मृत्यु पर शोक मनाने का एक दिन का भी अवकाश नहीं मिला; क्योंकि उसके पास शोक करने और गम मनाने की सहूलियत नहीं थी।

प्रश्न 11 : बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : खरबूज़े बेचने वाली स्त्री के बारे में बाज़ार के लोग निम्नलिखित बातें कह रहे थे–

(i) एक ने कहा कि इसके बेटे को मरे पूरा एक दिन भी नहीं हुआ और यह बेशर्म दुकान लगाकर बैठी है।

(ii) दूसरे ने कहा कि जैसी नीयत होती है, अल्ला भी वैसी बरकत देता है।

(iii) तीसरे ने कहा कि ये कमीने लोग हैं, इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई और धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा ही होता है।

(iv) चौथे ने कहा कि इसके घर में बेटे की मृत्यु का सूतक लगा है और यह खरबूज़े बेचने आ गई है। यदि किसी अनजान ने इससे खरबूज़े खरीद कर खा लिए तो उसका धर्म-ईमान नष्ट हो जाएगा।

प्रश्न 12 : लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

उत्तर : लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा अपने पड़ोस की उस संभ्रांत महिला को याद करके लगाया, जिसका पुत्र एक वर्ष पहले मर गया था। वह अढ़ाई मास तक पलंग से नहीं उठ पाई थी। उसे पंद्रह-पंद्रह मिनट में मूर्च्छा आ जाती थी। दो-दो डॉक्टर उसके इलाज में लगे रहते थे। शहर भर के लोगों के मन उसके पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे। बुढ़िया का दुःख भी ऐसा ही है, लेकिन किसी का मन उसके शोक से द्रवित नहीं हुआ बल्कि उसके लिए घृणा से भर गया; दुःख मनाने का अधिकार सबको समान नहीं होता, क्योंकि उसके लिए सुविधा और अवकाश चाहिए।

प्रश्न 13 : पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर : पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का एक तेईस वर्ष का लड़का था। जो अपनी डेढ़ बीघा ज़मीन में कछियारी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। परसों सुबह वह मुँह अँधेरे बेलों से खरबूज़े चुन रहा था कि एक साँप ने उसे डँस लिया। बहुत झाड़-फूँक कराई गई, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। बेटा अपने पीछे पत्नी और दो बच्चे छोड़ गया। बूढ़ी माँ ने अपना सबकुछ बेचकर बेटे का क्रिया-कर्म किया। अगले दिन भूख से बिलबिलाते बच्चों के लिए खाना जुटाने तथा बुखार से तपती बहू का इलाज कराने के लिए वह अपने कलेजे पर पत्थर रखकर रोती-बिलखती खरबूज़े बेचने बाज़ार में आ गई।

प्रश्न 14 : लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर : लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने निम्नलिखित उपाय किए–

(i) सबसे पहले उसने ओझा को बुलाकर झाड़-फूँक करवाया।

(ii) फिर उसने नाग देवता की पूजा कराई और घर में जो कुछ भी था, वह सब दान कर दिया।

प्रश्न 15 : 'जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।'—आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आशय– प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि पतंग कटने पर एकदम ही नीचे नहीं गिरती; क्योंकि हवा उसे रोके रखती है। उसी प्रकार जब हम झुककर अर्थात् अपना बड़प्पन भूलकर किसी निचली श्रेणी के व्यक्ति के दुःख को जानना चाहते हैं या उसके पास बैठना चाहते हैं तो हम एकदम ऐसा नहीं कर पाते; क्योंकि हमारी अच्छी पोशाक और ऊँच-नीच के भेदभाव का संकोच हमें ऐसा करने से रोक देता है।

प्रश्न 16 : 'शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ····दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।'—इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आशय – प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने दुःख करने जैसे स्वाभाविक भाव को भी वर्गीकृत रूप में दर्शाने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार, यदि अमीर दुःख मनाता है तो पूरा समाज उसके दुःख में सम्मिलित होता है और यदि कोई गरीब अपने दुःख को प्रकट करना चाहे तो वह उसी समाज की घृणा का पात्र बनता है।
दुःख मनाने का अधिकार मात्र धनवान् लोगों को है, निर्धनों को नहीं, क्योंकि वे अभावग्रस्त हैं और समाज उन्हें कुछ नहीं दे सकता। दुःख संसाधनों एवं सहूलियतों की माँग करता है, जिसके पास ये नहीं हैं, उसे दुःख मनाने का भी अधिकार नहीं है। प्रस्तुत पाठ का मूल व्यंग्य यही है।

प्रश्न 17 : बुढ़िया फफक-फफककर क्यों रो रही थी?

उत्तर : बुढ़िया के जवान बेटे की मृत्यु हो गई थी। उसे अपने परिवार का पेट भरने के लिए उसकी मृत्यु के अगले ही दिन खरबूज़े बेचने बाज़ार में आना पड़ा था। अपनी इसी विवशता पर बुढ़िया फफक-फफककर रो रही थी।

प्रश्न 18 : जिन लोगों द्वारा बुढ़िया पर घृणित व्यंग्य किए गए, उनमें धर्म-ईमान की चिंता किसे थी और क्यों?

उत्तर : जिन लोगों द्वारा बुढ़िया पर घृणित व्यंग्य किए गए उनमें परचून की दुकान पर बैठे लालाजी को धर्म-ईमान की बहुत चिंता थी। उनका कहना था कि इस बुढ़िया का जवान बेटा मर गया है। इसके घर में तेरह दिन तक सूतक लगा है। यह सूतक में भी खरबूज़े बेच रही है। ऐसे में यदि किसी अनजान व्यक्ति ने इसके खरबूज़े लेकर खा लिए तो उसका तो धर्म-ईमान ही नष्ट हो जाएगा।

प्रश्न 19 : सूतक क्या होता है? इसका क्या प्रभाव होता है?

उत्तर : परिवार में किसी परिजन की मृत्यु हो जाने या बच्चे का जन्म होने पर घर के वातावरण, वस्तुओं और व्यक्तियों को कुछ समय के

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लिए अपवित्र माना जाता है। इस समय को ही सूतक कहा जाता है। इस समय उस परिवार में कोई भी धार्मिक कार्य व पूजा-पाठ भी नहीं किया जाता और कोई अन्य व्यक्ति उस परिवार से कुछ भी न तो लेता है और न उस घर की कोई वस्तु खाता है; क्योंकि ऐसा करने पर वह व्यक्ति भी अपवित्र हो जाता है।

प्रश्न 20 : पोशाक किस स्थिति में बंधन बन जाती है? इस स्थिति की तुलना किससे की गई है?

उत्तर : जब हम समाज की निचली श्रेणी के लोगों के पास बैठकर उनके दुःख की अनुभूति करना चाहते हैं तो उस स्थिति में पोशाक हमारे लिए बंधन और अड़चन बन जाती है। लेखक ने इसकी तुलना कटी पतंग से की है; जैसे–वायु की लहरें कटी पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिरने देतीं, उसी प्रकार हमारी पोशाक भी उपर्युक्त परिस्थिति में हमें झुकने अर्थात् अपना बड़प्पन त्यागने से रोके रखती है।

प्रश्न 21 : जब लेखक बुढ़िया के पास बैठकर उसे सांत्वना न दे सका तो उसकी क्या हालत हुई और क्यों?

उत्तर : जब लेखक बाज़ार में रोती हुई बुढ़िया को सांत्वना न दे सका तो उसके मन में इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति रोष उत्पन्न हुआ और वह बेचैन हो गया। उसी हालत में वह नाक ऊपर उठाए, राह चलतों से ठोकरें खाता आगे को चल पड़ा। उसकी यह हालत इसलिए हो गई थी; क्योंकि उसे उस दुःखी बुढ़िया के पास जाकर सहानुभूति दिखाने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

प्रश्न 22 : लेखक ने अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला के पुत्र-वियोग की दशा का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : जब लेखक के पड़ोस की संभ्रांत महिला के पुत्र की मृत्यु हुई थी तो वह पुत्र-शोक में अढ़ाई महीने तक पलंग से नहीं उठ सकी थी। उसे पंद्रह-पंद्रह मिनट में मूर्च्छा आ जाती थी। उसकी आँखों से हर समय आँसू बहते रहते थे। दो-दो डॉक्टर उसकी देखभाल के लिए हर समय उसके सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम उसके सिर पर बरफ़ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उसके पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

प्रश्न 23 : बुढ़िया को अपना छन्नी-ककना क्यों बेचना पड़ा?

उत्तर : बुढ़िया ने साँप से डँसे गए अपने लड़के के प्राण बचाने के लिए ओझा से झाड़-फूँक करवाया। झाड़-फूँक के खर्च को पूरा करने के लिए उसके घर का सारा आटा और अनाज समाप्त हो गए। बेटे के लिए कफ़न खरीदने के लिए उसे अपना छन्नी-ककना बेचना पड़ा।

प्रश्न 24 : इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' बिलकुल उचित है। इस पाठ में लेखक ने बताया है कि दुःख की अनुभूति सबको समान रूप से होती है। दुःख सभी को तोड़ता है, दुःख में हर कोई मातम मनाना चाहता है, दुःख के पलों में हर कोई विवश हो जाता है। लेकिन हमारे समाज में दुःख मनाने का अधिकार समान नहीं है। कुछ लोग तो दुःख का मातम महीनों तक मनाते हैं; जैसे लेखक के पड़ोस की संभ्रांत महिला और कुछ के पास उसे एक दिन भी मनाने की सुविधा और अवकाश नहीं; जैसे–खरबूज़े बेचने वाली महिला। 'अधिकार' शब्द से लेखक ने समाज में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक असमानता पर चोट की है; अतः इस पाठ का शीर्षक पूर्णतः सार्थक है।

प्रश्न 25 : 'इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।'—आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय** – प्रस्तुत पंक्ति हमारे समाज में फैली उन कुरीतियों और बुराइयों की ओर संकेत कर रही है, जो व्यक्ति को उसकी आर्थिक स्थिति से तौलती हैं। बुढ़िया का बेटा मर चुका है। घर में बीमार बहू और भूख से बिलबिलाते बच्चे हैं, घर की रोज़ी-रोटी सब्ज़ी व फल बेचकर ही चलती है। भूखे बच्चों के लिए रोटी की व्यवस्था हेतु बुढ़िया बाज़ार में जाकर खरबूज़े बेचने बैठ जाती है। लोगों को आश्चर्य होता है कि कल ही इसका बेटा मरा है, अभी 'सूतक' चल रहा है, फिर भी इस बुढ़िया को पैसे का इतना लालच है कि यह धर्म-ईमान भी भूल बैठी। सूतक उतरने तक इस तरह का काम करना पाप है, लेकिन इस बुढ़िया के लिए न तो बेटा बड़ा है, न बेटी, न पति, न बहू-पोते। धर्म-ईमान तो कहीं है ही नहीं, जो कुछ है सब पैसे या रोटी का टुकड़ा। समाज की यह सोच कितनी घृणित है, इससे इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रश्न 26 : क्या समाज में मनुष्य का स्थान उसकी पोशाक या आर्थिक स्थिति से निर्धारित होना चाहिए? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : हमारे विचार से समाज में व्यक्ति का स्थान पोशाक या आर्थिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि उसके मानवीय गुणों के आधार पर निर्धारित होना चाहिए। समाज उसी व्यक्ति को महत्त्व देता है, जो समाज का कल्याण करता है। अच्छी और कीमती पोशाक पहनने से समाज का हित नहीं होता। समाज का हित दया, परोपकार, सहयोग और सेवा आदि मानवीय गुणों से होता है। इतिहास गवाह है कि जिन लोगों में ये मानवीय गुण समाहित थे, समाज ने उन्हीं लोगों को महत्त्व दिया। गांधीजी केवल एक लँगोटी धारण करते थे। उनकी पोशाक बहुत अच्छी या कीमती नहीं थी, लेकिन समाज और देश की सेवा करने तथा सत्य, अहिंसा आदि मानवीय गुणों के कारण समाज ने उन्हें राष्ट्रपिता का दर्ज़ा दिया। अतः समाज में व्यक्ति का दर्ज़ा उसकी पोशाक से नहीं, बल्कि उसके मानवीय गुणों के आधार पर निर्धारित होना चाहिए।

प्रश्न 27 : खरबूज़े बेचने वाली बुढ़िया और संभ्रांत महिला दोनों पुत्र-वियोगिनी हैं। दोनों के दुःख की अनुभूति समान है, लेकिन उनके दुःख के अधिकार में अंतर है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : खरबूज़े बेचने वाली बुढ़िया और संभ्रांत महिला दोनों ही माँ हैं। दोनों के पुत्रों की मृत्यु हुई है; अतः दोनों के दुःख की अनुभूति एकसमान है, लेकिन दोनों के दुःख मनाने के अधिकार में बहुत अंतर है। खरबूज़े बेचने वाली बुढ़िया के बेटे की मृत्यु के बाद उसके घर में कमाने वाला कोई नहीं है। घर में बहू और पोता-पोती हैं। उनके पास खाने के लिए एक दाना भी नहीं है। जब बच्चे भूख से बिलबिलाते हैं तो बुढ़िया अपना दुःख मनाने का अधिकार भूल जाती है और अपने कलेजे पर पत्थर रखकर खरबूज़े बेचने चली जाती है, ताकि बच्चों को कुछ खिला सके। उसकी इस विवशता का लोग उपहास करते हैं और उस पर व्यंग्य बाण चलाते हैं।

दूसरी ओर संभ्रांत महिला अढ़ाई माह तक पलंग से नहीं उठती, उसकी देखभाल के लिए हर समय दो-दो डॉक्टर लगे रहते थे। सारा शहर उसके पुत्र-शोक से द्रवित था। उसके पास दुःख मनाने के अधिकार के लिए सहूलियत भी थीं और अवकाश भी था, लेकिन खरबूज़े बेचने वाली महिला के पास दुःख के अधिकार की न तो सुविधा थी और न अवकाश था।

प्रश्न 28 : "अरे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।" इस कथन का बुढ़िया के दुःख से क्या संबंध है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : बाज़ार में खड़े व्यक्ति का उपर्युक्त कथन व्यंग्यात्मक है और बुढ़िया के पुत्र-शोक एवं उससे उत्पन्न उसके दुःख के भाव से इसका कोई मानवीय संबंध नहीं बनता। इस प्रकार का कथन कहने वाले स्पष्टतः रुग्ण मानसिकता के शिकार होते हैं। हालाँकि समाज में ऐसी स्थितियाँ प्रायः देखने को मिल जाती हैं कि लोग दूसरे की पीड़ा पर ऊल-जलूल टिप्पणी करके उसका आनंद लेते हैं।

दरिद्रता या अभाव ही जीवन की ऐसी विकट स्थितियाँ हैं, जब कोई भी व्यक्ति उपहास, व्यंग्य एवं अपमान सहने को बाध्य होता है। बुढ़िया की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी अत्यंत दयनीय थी, इसी कारण उसके प्रति लोग इस प्रकार की अपमानजनक एवं व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियाँ कर रहे थे, अन्यथा पुत्र का मरना किसी माँ के लिए वास्तव में कितना कष्टप्रद हो सकता है, कोई भी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

संवेदनशील मनुष्य इसका सहज ही अनुमान लगा सकता है। किसी के मरने और दुःखी होने के संदर्भ में बरकत की बात करना, तो नितांत अमानवीय मानसिकता है।

प्रश्न 29 : मरणासन्न व्यक्ति के प्राण-रक्षण हेतु कराए गए पूजा-पाठ में दान-दक्षिणा बटोरना एक तुच्छ सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। क्या आप इसे उचित मानते हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : किसी शुभ अवसर पर पूजा-पाठ के समय दान-दक्षिणा देना और लेना तो कुछ उचित लगता है, लेकिन मृत्यु जैसी विकट आपदा की स्थिति में भी ऐसी सामाजिक मान्यताओं की दुहाई देना बहुत बड़ी विडंबना है। ऐसी स्थिति में इन मान्यताओं के चक्कर में पड़कर व्यक्ति अपना श्रम, समय तथा धन सबकुछ गँवाकर भी वास्तविक तौर पर कुछ भी हासिल नहीं कर पाता। किसी आकस्मिक घटना के कारण मौत के मुँह में पड़े हुए व्यक्ति के लिए दान-दक्षिणा और पूजा-पाठ का कोई औचित्य नहीं है। यदि ऐसा कुछ किया भी जाता है तो उस कार्य को करने वाले व्यक्ति का पहला उद्देश्य उस व्यक्ति के जीवन की रक्षा करना होना चाहिए, न कि धन-संग्रह करने का साधन। यथार्थ में होता यह है कि समाज का एक विशेष परंपरापोषक वर्ग अभाव और दुःख में भी अपनी आय के रास्ते तलाशने लगता है और तथाकथित रूढ़िवादी मान्यताओं की आड़ में दूसरों के दुःख को भी अपने लिए कमाई का साधन बना लेता है। समाज की ये परंपराएँ किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं; क्योंकि परंपराओं का निर्वाह व्यक्ति और समाज की बेहतरी के लिए किया जाता है, न कि उसे मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर तथा विवश बनाने के लिए। इसलिए ऐसी मान्यताओं को छोड़ देना ही समाज के हित में है, जो परंपराएँ मनुष्य को बेहतर जीवन-स्थितियाँ उपलब्ध कराने में सहायक न हों और वे उसका शोषण करें, उन्हें प्रचलन में रखने का कोई औचित्य नहीं दिखाई देता।

प्रश्न 30 : 'दुःख का अधिकार' कहानी समाज में व्याप्त असमानता को उजागर करती है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : महान कथाकार यशपाल द्वारा रचित कहानी 'दुःख का अधिकार' समाज में व्याप्त भेदभाव के चरम-उत्कर्ष को स्पष्ट करती है। कहानी का केंद्रीयभाव इस सत्य को व्यक्त करता है कि एक निर्धन व्यक्ति को अपने दुःख से दुःखी होने तथा उससे बाहर निकलने का भी अवसर प्राप्त नहीं है। वह दुःख की चरम अवस्था में भी समाज की आलोचना का शिकार होता है। इसी कारण उसकी आर्थिक बेबसी उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त भी नहीं करने देती।

इसके विपरीत एक धनी व्यक्ति अपने दुःख का भरपूर प्रदर्शन करता है। संभ्रांत महिला को आर्थिक समस्या नहीं है, इसलिए वह अपने पुत्र की मृत्यु का शोक अढ़ाई महीने तक मनाती है, जबकि भगवाना की माँ के सामने भूखे बच्चों एवं बीमार बहू के भरण-पोषण का भार है, इसलिए वह चाहकर भी एक दिन भी घर बैठकर रोकर अपने दुःख को हल्का नहीं कर पाती।

उसकी सहायता करने की जगह लोग उसे ताने मार रहे हैं; क्योंकि वह गरीब है। जवान बेटे की मृत्यु के बाद उसे लोग पहले से भी अधिक तिरस्कृत दृष्टि से देखते हैं। समाज में व्याप्त असमानता जीवन में दुःख को अभिव्यक्त करने में भी स्पष्ट रूप से दिखती है। लगता है कि निर्धन व्यक्ति को शोक मनाने का भी अधिकार नहीं है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता लगा-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूज़ों की डलिया बाज़ार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती। लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूज़े चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डँस लिया।

1. लेखक को बुढ़िया के विषय में जानकारी कहाँ से मिली–
(क) उसके घर से (ख) उसके पड़ोसी से
(ग) पास-पड़ोस की दुकानों से (घ) उसके रिश्तेदारों से।

2. बुढ़िया का लड़का कितने बरस का था–
(क) सोलह बरस का (ख) बीस बरस का
(ग) तीस बरस का (घ) तेईस बरस का।

3. लड़का क्या काम करता था–
(क) नौकरी (ख) मज़दूरी
(ग) कछियारी (घ) व्यापार।

4. लड़का कैसे मरा–
(क) बीमारी से (ख) साँप के डँसने से
(ग) कुत्ते के काटने से (घ) पानी में डूबने से।

5. बुढ़िया के घर में और कौन-कौन थे–
(क) उसके माता-पिता
(ख) उसके सास-ससुर
(ग) उसकी बहू और पोता-पोती
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. 'दुःख का अधिकार' पाठ के लेखक हैं–
(क) रामविलास शर्मा (ख) यशपाल
(ग) काका कालेलकर (घ) स्वामी आनंद।

7. 'दुःख का अधिकार' कहानी में लेखक क्या बताना चाहता है–
(क) दुःख व्यक्त करने का अधिकार अमीरों को ही होता है
(ख) गरीब आदमी को दुःख की अनुभूति कम होती है
(ग) गरीब आदमी को दुःख व्यक्त करने का अधिकार नहीं है
(घ) दुःख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है।

8. 'और चारा भी क्या था?' यह पंक्ति बुढ़िया के किस भाव को व्यक्त करती है–
(क) विवशता को (ख) निराशा को
(ग) प्रसन्नता को (घ) धैर्य को।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

10. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी?

11. लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाज़ा कैसे लगाया?

12. 'शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ····दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।'—इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in